तब सुध पाई सब बेसक, हुए बेसक खबरदार।
हकें ऐसी दई बेसकी, हुए बेसक बेसुमार।। ९६ ।।

जब हमने जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान प्राप्त कर लिया, तो हम सावचेत हो गए। श्री राजजी ने ऐसी बेशकी दी कि अब किसी प्रकार का कोई संशय रहा ही नहीं।

इनहीं बात की हांसी है, उड़त ना फरामोस।
ना तो जब बेसक हुए, हाए हाए क्यों न आवत होस।। ९७ ।।

अब इसी बात की हंसी है कि फरामोशी की नींद क्यों नहीं उड़ती? नहीं तो जब बेशक हो गए तो हाय! हाय! हे मोमिनो! फिर भी तुम्हें होश नहीं आता!

ऐही हांसी इसही बात की, फरामोसी में जाग्रत।
जागे में भी सक नहीं, कोई ऐसी इस्कें करी जो इत।। ९८ ।।

हंसी इस बात की है कि फरामोशी में भी जाग रहे हैं। धनी के इस इश्क ने हमारी ऐसी हालत कर दी है कि जाग जाने में भी अब कोई संशय नहीं, अर्थात् परमधाम में फरामोशी और खेल में जागृत बुद्धि के ज्ञान से जागृत हैं।

बैठाए बेसक अर्स में, और जगाए बेसक।
हांसी भी बेसक हुई, जो आया नहीं इस्क।। ९९ ।।

बेशक हम परमधाम में बैठे हैं और बेशक हम तारतम वाणी से यहां जागृत हो गए। हंसी भी बेशक हुई, क्योंकि इश्क नहीं आया।

कहे महामत तुम पर मोमिनों, दम दम जो बरतत।
सो सब इस्क हक का, पल पल मेहेर करत।। १०० ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम्हारे ऊपर जो खेल में पल-पल बीत रहा है, वह सब श्री राजजी महाराज का इश्क ही है जो हर पल तुम्हारे ऊपर मेहर बरसा रहे हैं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ ७०५ ॥

बुलाए ल्याओ तुम रूहअल्ला

ल्याओ बुलाए तुम रूहअल्ला, जो रूहें मेरी आसिक।
रब्द किया प्यार वास्ते, कहियो केहेलाया हक।। १ ।।

हे श्यामा महारानी! मेरी आशिक कहलाने वाली रूहों को जो खेल में हैं, उनको बुलाकर लाओ। उन्होंने परमधाम में इश्क का रब्द किया था (उनको इश्क की पहचान हो गई होगी)। उन्हें याद कराना कि श्री राजजी महाराज बुला रहे हैं।

रूहअल्ला सों बका मिने, हकें करी मजकूर।
उतरी अरवाहें अर्स से, बुलाए ल्याओ हजूर।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने श्यामा महारानीजी से घर (परमधाम) की यही बातें कीं कि रूहें खेल में आईं हैं, उन्हें बुला लाओ।

Nijanand App

हक बका का बातून, जो किया रूहों सों गुझ।
केहेलाइयां बातें छिपियां, खिलवत करके मुझ।।३।।

श्री राजजी महाराज ने कहा कि अखण्ड घर में जो रूहों से वार्तालाप किया था, उन गुप्त बातों को याद दिलाना, जो मेरे साथ इकट्ठे बैठकर की थीं।

मैं वास्ता कहूं तुमको, उतरियां कारन इन।
इनों रब्द किया इस्क का, आगूं मेरे बीच वतन।।४।।

श्री राजजी श्यामाजी से कहते हैं कि मैं तुमसे विनय करके कहता हूं कि रूहों ने मेरे सामने परमधाम में इश्क का रब्द किया था। इस कारण वह खेल में गई हैं।

करी रूहों मसलहत मिल के, कहे हमको प्यारे हक।
और बड़ीरूह प्यारी हमको, ए बात जानो मुतलक।।५।।

सब रूहों ने मिलकर, सलाह की और कहा कि हमको श्री राजजी महाराज प्यारे हैं और श्यामाजी भी हमको प्यारी हैं, यह बात निश्चित जानो।

बड़ीरूह कहे प्यारे मुझे, मेरा साहेब बुजरक।
और प्यारी रूहें मेरे तन हैं, ए जानो तुम बेसक।।६।।

श्री श्यामाजी महारानी कहते हैं कि मुझे मेरे महिमा युक्त श्री राजजी प्यारे हैं और मेरे ही अंग रूहें मुझे प्यारी हैं, यह बात निश्चित जानो।

तुम रूहें नूर मेरे तन का, इन विध केहेवे हक।
बोहोत प्यारी बड़ीरूह मुझे, मैं तुमारा आसिक।।७।।

श्री राजजी ने कहा कि तुम रूहें मेरे नूरी तन के अंग हो। मुझे श्यामा महारानी बहुत प्यारी हैं और मैं तुम्हारा आशिक हूं।

प्यार हक का ज्यादा हमसों, ए उपजी रूहों दिल सक।
इस्क हमारा हक सों, क्या नहीं हक माफक।।८।।

रूहों के दिल में यह संशय पैदा हो गया कि हमसे ज्यादा धनी का इश्क कैसे हो सकता है? क्या हमारा इश्क श्री राजजी के बराबर भी नहीं है?

और भी ए रूहों कह्या, हक प्यारे हैं हमको।
और प्यारी बड़ीरूह, जरा सक नहीं इनमों।।९।।

रूहों ने यह भी कहा कि श्री राजजी महाराज हमें प्यारे हैं और बड़ी रूह श्यामाजी भी हमें प्यारी हैं, इसमें कोई संशय नहीं है।

तब ए बात सुन हकें कह्या, मैं प्यारा हों तुमको।
पर मैं आसिक अरवाहों का, सो कोई जानत नहीं तुममों।।१०।।

इस बात को सुनकर श्री राजजी महाराज ने कहा कि मैं तुमको अवश्य ही प्यारा हूं, परन्तु मैं तुम्हारा आशिक हूं जो तुममें से कोई जानता नहीं है।

Nijanand App

तुम ज्यादा प्यार कह्या अपना, हादी कहे मेरा अधिक।
मैं कह्या प्यार मेरा ज्यादा, तब तुमें उपजी सक।। ११ ।।

हे रूहो! तुमने अपना प्यार ज्यादा कहा और श्यामा महारानी जी कहती हैं कि प्यार मेरा अधिक है, परन्तु जब मैंने कहा कि मेरा प्यार ज्यादा है तो तुम्हें संशय हो गया।

तुम रूहें मेरे नूर तन, सो वाहेदत के बीच एक।
इस्क बेवरा बका मिने, क्यों पाइए ए विवेक।। १२ ।।

हे रूहो! परमधाम में हमारी एकदिली है और तुम सब मेरे नूरी तन हो, इसलिए अखण्ड परमधाम में इश्क का ब्यौरा कैसे हो सकता है?

तुम बड़ा इस्क कह्या अपना, मेरा न आया नजर।
खेल देखाया तिन वास्ते, अब देखो सहूर कर।। १३ ।।

तुमने अपने इश्क को बड़ा कहा है, पर मेरा इश्क तुम्हें दिखाई नहीं दिया, इसलिए तुमको खेल दिखाया है। अब विचार करके देखो।

ए बेवरा बीच बका मिने, इस्क का न होए।
दई जुदागी तिन वास्ते, बात करी बका में सोए।। १४ ।।

अखण्ड परमधाम में इश्क का ब्यौरा नहीं हो सकता, इसलिए तुमको परमधाम से जुदाई दी है।

छिपाइयां अपनी मेहेर में, देखाया और आलम।
देखो कौन आवे दौड़ अर्स में, लेय के इस्क खसम।। १५ ।।

अपने चरणों तले तुम्हें बिठा रखा है और तुम्हें दूसरी दुनियां दिखाई। अब देखते हैं कि मेरा इश्क लेकर परमधाम कौन दौड़कर आता है?

रूहों ऐसा खेल देखाऊं मैं, जित झूठे झूठ पूजत।
ढूंढ़ें अव्वल आखिर लग, तो हक न कहूं पाइयत।। १६ ।।

हे रूहो! मैं ऐसा खेल दिखाऊंगा जहां झूठे आदमी झूठ की ही पूजा करते हैं और शुरू से आखिर तक पारब्रह्म को ढूंढ़ते हैं, पर किसी को मिलता नहीं है।

आए फंसे तिन फरेब में, पानी पत्थर आग पुजात।
अर्स साहेब कायम की, कहूं सुपने न पाइए बात।। १७ ।।

तुम भी ऐसे झूठे संसार में आकर फंस गये हो। जहां पानी, पत्थर, आग की पूजा होती है। जहां पर अखण्ड परमधाम की, पारब्रह्म की सपने में भी सुध नहीं मिलती।

आइयां तिन आलम में, जित हक को न जानत कोए।
पूजें खाहिस हवाए को, जो कोई इनमें बुजरक होए।। १८ ।।

ऐसी दुनियां में आ गए हो जहां पारब्रह्म को कोई नहीं जानता। सभी अपनी झूठी इच्छा को पूरा करने के लिए इस संसार के सबसे बड़े मालिक भगवान विष्णु और निराकार की पूजा करते हैं।

झूठे मोहोरे जो खेल के, मिल गैयां माहें तिन।
कबीला कर बैठियां, कहे एह हमारा वतन।। १९ ।।

इस संसार के अगुए, ज्ञानी, धर्माचार्य झूठे हैं। रूहें भी उनमें जाकर मिल गईं और कुटुम्ब बनाकर बैठ गईं और कहती हैं कि यही हमारा घर है।

Nijanand App

समझाईयां समझें नहीं, मानें नहीं फुरमान।
कहें कौन तुम कौन हम, अपने कैसी पेहेचान।। २० ।।

अब समझाने पर भी समझते नहीं हैं और श्री राजजी महाराज के हुकम को नहीं मानते हैं। कहते हैं कि तुम कौन, हम कौन, हमारा तुम्हारा नाता ही क्या है?

ए सोई हमारा साहेब, जो बड़कों दिया बताए।
ए पत्थर पानी आग है, पर हमसों छोड़्या न जाए।। २१ ।।

हमारे दादा-परदादा ने जो भगवान बताया है, वही हमारा परमात्मा है। यह आग, पानी, पत्थर हैं। पर इसे नहीं छोड़ सकते (क्योंकि हमारे बड़ों का खुदा है)।

बड़के हमारे कदीम के, पूजत आए ए।
सो क्यों छूटे हमसे, रब बाप दादों का जे।। २२ ।।

हमारे बुजुर्ग सदा से जिसकी पूजा करते आए हैं, वह हमारा खानदानी परमात्मा है। उसे कैसे छोड़ें?

रब रसूल बतावे गैब का, हम पूजें जाहेर।
हम बातून को पोहोंचे नहीं, देखें नजर बाहेर।। २३ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि पारब्रह्म अतीत में छिपे हैं जो दिखाई नहीं देते। हमारा खुदा मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारों में बैठा है। उसकी हम पूजा करते हैं। हम छिपे परमात्मा को जो नजर नहीं आता, नहीं मानते। हम तो परमात्मा को सामने देखकर पूजते हैं (हम प्रत्यक्ष की पूजा करते हैं, परोक्ष की नहीं)।

केतिक करें लड़ाइयां, सामी देवें फरेब।
कौन रसूल कौन रूहअल्ला, कौन वेद कौन कतेब।। २४ ।।

कितने लोग आपस में लड़ाइयां लड़ते हैं और कितने ही सामने वाले को धोखा देते हैं। कहते हैं, अरे जा, जा, कहां का रसूल, कहां के रूहअल्लाह, कहां के वेद और कहां के कतेब लगा रखे हैं।

इन हाल जो दुनियां, ए गईयां तिन में मिल।
मोहे इस्क बिना पावें नहीं, रूहों ऐसी भई मुस्किल।। २५ ।।

ऐसे हालात की जो दुनियां है, उसी में मोमिन भी आकर मिल गए। श्री राजजी कहते हैं कि रूहें ऐसे संकट में फंस गई हैं कि वह मुझे बिना इश्क के नहीं पा सकतीं।

कठिन हाल है रूहों का, पर तुम विरचो जिन।
भूल गईयां उनें सुध नहीं, हांसी एही मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी श्री श्यामाजी से कहते हैं कि रूहें बड़े संकट में फंसी पड़ी हैं, पर तुम भी वहां जाकर फंस नहीं जाना। रूहें तो जाकर खेल में भूल गई हैं और उन्हें सुध नहीं है। इसी बात की हंसी उन पर होगी।

बड़ी हांसी इत होएसी, जब सब होसी रोसन।
खेल खुसाली इत होएसी, इस्क बेवरे इन।। २७ ।।

जब सब रूहें परमधाम में जागृत हो जाएंगी तब सब से बड़ी हंसी यहां परमधाम में होगी। इश्क का ब्यौरा हो जाएगा और खेल की चर्चा से खूब आनन्द आएगा।

Nijanand App

एक रोसी एक हंससी, होसी खूबी बड़ी खुसाल।
बिना इस्क बीच अर्स के, कोई देखे न नूरजमाल।। २८ ।।

एक सखी रोएगी, एक हंसेगी। इस तरह से बड़ा आनन्द आएगा। इश्क के बिना कोई भी ब्रह्मसृष्टि परमधाम नहीं जा सकती और धनी के दर्शन नहीं कर सकती।

रोसी इनहीं हाल में, वास्ते हांसी के।
मुदा सब हांसीय का, फरामोसी का जे।। २९ ।।

हंसी के वास्ते ही यहां की हालत में पश्चाताप करेगी। यह फरामोशी का सारा मुद्दा हंसी के लिए है।

रूहअल्ला एता कहियो, तुम मांग्या सो फरामोस।
जब इस्क ज्यादा आवसी, तब आवसी माहें होस।। ३० ।।

हे श्यामा महारानी! तुम जाकर इतना कहना कि तुमने फरामोशी का खेल मांगा था। तुमको जब ज्यादा इश्क आएगा तब तुम परमधाम में होश में आओगी।

मैं छिपा हों इनसे, रूहें नजर में ले।
वह देखत झूठा आलम, मोको देखत नाहीं ए।। ३१ ।।

मैं रूहों को अपने चरणों तले बिठाकर छिप गया हूं। अब यह रूहें झूठे संसार को देख रही हैं, मुझे नहीं देखतीं।

जब इस्क इनों आवसी, तब देखेंगे मुझको।
इस्क बिना इन अर्स में, मैं मिलों नहीं इनसों।। ३२ ।।

इनको जब इश्क आएगा तब मुझे देखेंगी। बिना इश्क के परमधाम में मैं इनसे नहीं मिलता।

रब्द रूहों ने हकसों, किया इस्क का जोए।
तो अर्स में इस्क बिना, पैठ न सके कोए।। ३३ ।।

रूहों ने इश्क का ही रब्द किया था। अब इसलिए बिना इश्क के परमधाम में कोई नहीं आ सकता।

इनों रब्द किया इस्क का, हम जैसा हक का नाहें।
दई फरामोसी इन वास्ते, देखों कैसा इस्क इनों माहें।। ३४ ।।

रूहों ने कहा था कि हमारे जैसा इश्क श्री राजजी महाराज का नहीं है, इसलिए इनको फरामोशी दी है ताकि देखें, इन में कैसा इश्क है।

ऐसी देखाई दुनियां, जित कोई हक को जानत नाहें।
काहूं तरफ न पाइए अर्स की, बैठे बका बैत के माहें।। ३५ ।।

इन रूहों को ऐसी दुनियां दिखाई है जहां पारब्रह्म को कोई नहीं जानता है और न किसी को परमधाम की पहचान है। यह यहां इसी को अखण्ड घर मानकर बैठे हैं।

पार न अर्स जिमीय का, बैठियां कदम तले इत।
ऐसा पट आड़ा किया, जानूं कहूं गईयां हैं कित।। ३६ ।।

परमधाम की जमीन बेहिसाब है। यह मेरे चरणों के तले बैठी हैं। इनके सामने फरामोशी का ऐसा परदा दे दिया है कि लगता है कि बाहर गई हैं।

Nijanand App

जब याद तुमें मैं आऊंगा, तबहीं बैठोगे जाग।
गए आए कहूं नहीं, सब रूहें बैठीं अंग लाग।। ३७ ।।

जब मैं तुम्हें याद आऊंगा तब तुम जागकर बैठोगी। रूहें कहीं आई गई नहीं हैं। सब चरणों के तले अंग से अंग लगाकर बैठी हैं।

मैं लाड़ किया रूहन सों, वास्ते इस्क इन।
क्यों न लें मेरा इस्क, अंग असलू मेरे तन।। ३८ ।।

मैंने इश्क के वास्ते ही रूहों से लाड़ किया है। जब यह रूहें मेरे तन के अंग हैं तो यह मेरा इश्क क्यों नहीं लेतीं?

बोहोत लाड़ किए मुझसों, इनों अर्स में मिल।
एक लाड़ किया मैं इनों से, प्यार देखन सब दिल।। ३९ ।।

इन रूहों ने मेरे साथ परमधाम में मिलकर बहुत लाड़ किए। मैंने इनके दिल का प्यार देखने के लिए एक लाड़ किया।

मैं फुरमान भेज्या है अव्वल, हाथ अमीन रसूल।
इमाम भेज्या रूहों वास्ते, जिन जावें ए भूल।। ४० ।।

मैंने शुरू में सत्य निष्ठ (ईमानदार) रसूल साहब को कुरान देकर भेजा और इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी को कुरान के छिपे रहस्य खोलने के लिए भेजा ताकि रूहें भूल न जाएं।

याद दीजो अरवाहों को, जो मैं करी खिलवत।
सो ए लिखी फुरमान में, रमूजें इसारत।। ४१ ।।

हे श्यामा महारानी! रूहों को जाकर याद दिलाना जो मैंने तुमसे बातें की हैं। वह सब बातें कुरान में लिखी हैं, परन्तु हैं सब इशारों में।

अव्वल बातें जो अर्स की, जाए कहियो तुम।
फुरमान पेहेले भेजिया, लिखी हकीकत हम।। ४२ ।।

हे श्यामा महारानी! सबसे पहले जाकर तुम परमधाम की बात कहना और फिर कहना कि हमने सारी हकीकत कुरान में लिखकर तुम्हारे पास भेजी है।

बातें बका में जो हुई, जब उनों होसी रोसन।
तब तुरत ईमान ल्यावसी, जो मेरे हैं मोमिन।। ४३ ।।

यह अखण्ड परमधाम की बातें जब उन्हें मालूम होंगी तो मेरी जो रूहें हैं, वह तुरन्त ईमान लाएंगी।

इलम मेरा उनों में, जाए करो जाहेर।
मैं सेहेरग से नजीक, नहीं बका थें बाहेर।। ४४ ।।

हे श्यामा महारानी! मेरी जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान मोमिनों में जाकर जाहिर करो। मैं अखण्ड घर से बाहर नहीं हूं और मोमिनों के लिए सेहेरग से नजदीक हूं (उनके दिल में बैठा हूं)।

तुम बैठे मेरे कदम तले, कहूं गईयां नाहीं दूर।
ए याद करो इन इस्क को, जो अपन करी मजकूर।। ४५ ।।

तुम मेरे चरणों के तले बैठी हो। कहीं नहीं गई हो, इसलिए इस इश्क की बात को याद करो जिसकी आपस में चर्चा की है।

Nijanand App

इत जो करी मजकूर, अजूं सोई है साइत।
चार घड़ी दिन पीछला, तुम जानो हुई मुद्दत।।४६।।

यहां जो आपस में बातचीत हुई है अभी वही क्षण है। (अर्थात् सायं साढ़े चार बजे का), परन्तु तुम जान रहे हो यहां मुद्दत बीत गई है।

जों रब्द किया इत बैठ के, अजूं बैठे हो ठौर इन।
रात दिन ना पल घड़ी, सोई बात सोई खिन।।४७।।

तुमने परमधाम में जहां बैठकर इश्क किया था, अभी भी तुम वहीं बैठे हो। रात, दिन, पल, घड़ी कुछ नहीं बीता। वही बात हो रही है, वही क्षण है।

याही अजमाइस वास्ते, खेल देखाया ए।
जब इलम मेरे बेसक हुई, तब दौड़सी इस्क ले।।४८।।

यह तुम्हारे इश्क की पहचान के वास्ते खेल दिखाया है। जब मेरी जागृत बुद्धि की वाणी से बेशक हो जाओगी, तब इश्क लेकर दौड़ोगी।

नाम मेरा सुनते, और सुनत अपना वतन।
सुनत मिलावा रूहों का, याद आवे असल तन।।४९।।

मेरा नाम सुनकर अपने घर की बात सुनकर तथा रूहों के मिलावे की बात सुनकर तुरन्त अपने असल तन परआतम की याद आ जाएगी।

सक मिटी जिनों हक की, और मिटी हादी की सक।
बेसक हुइयां आप वतन, ताए क्यों न आवे इस्क।।५०।।

जिनको श्री राजजी महाराज का, श्यामा महारानी का तथा अपने घर परमधाम का संशय मिट जाएगा। उनको इश्क क्यों नहीं आएगा।

सांच झूठ में मिल गईयां, तुरत होसी तफावत।
करसी पल में बेसक, ऐसा इलम मेरी न्यामत।।५१।।

यह सच्चे मोमिन झूठे संसार में जाकर मिल गये हैं। मेरा जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान एक पल में इनके संशय दूर कर देगा। तब झूठ और सत्य के फर्क का पता चल जाएगा। यह ऐसी मेरी न्यामत है।

अजमावने अरवाहों को, हकें दिया वास्ते इन।
अव्वल फरामोसी देय के, इलमें खोले दीदे बातन।।५२।।

श्री राजजी महाराज ने रूहों को आजमाने के वास्ते ही पहले फरामोशी दी फिर तारतम ज्ञान देकर बातूनी नजर खोली।

बातून खुले ऐसा हुआ, सेहेरग से नजीक हक।
तुम बैठे बीच अर्स के, कदम तले बेसक।।५३।।

बातूनी नजर खुलने से पारब्रह्म सेहेरग से नजदीक हो गए और तुम परमधाम में पारब्रह्म के चरणों तले बैठी हो। इससे संशय मिट गए।

Nijanand App

चौदे तबकों न पाइए, हक बका ठौर तरफ।
सो कदम तले बैठावत, ऐसा इलम का सरफ।।५४ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में अखण्ड परमधाम के ठौर-ठिकाने का पता नहीं था। अपने चरणों तले बिठाकर ऐसा श्रेष्ठ (कमाल का) तारतम ज्ञान दे दिया।

इलम हक के बेसकी, बेसक आवे सहूर।
बेसक पेहेचान हक की, बरस्या बेसक बका नूर।।५५ ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी संशय मिटाने वाली है। इससे विवेक आ जाता है तथा श्री राजजी महाराज की पहचान हो जाती है और अखण्ड परमधाम के सुखों की वर्षा होती है।

बेसक असल सुख की, आवे बेसक रूहों इलम।
जरे जरे की बेसकी, जो बीच नजर खसम।।५६ ।।

तारतम ज्ञान से श्री राजजी महाराज के चरणों तले बैठी रूहों को असल सुख की, परमधाम के कण-कण की बेशकी हो जाएगी।

बेसक देखी फरामोसी, बेसक गिरो मोमिन।
बेसक फुरमान रमूजें, पाई बेसक बका वतन।।५७ ।।

रूहों ने फरामोशी का खेल देखा है और मोमिनों के वास्ते जो श्री राजजी महाराज ने कुरान में इशारतें लिखी हैं और अखण्ड परमधाम हमारा घर है, इन सब बातों में कोई संशय नहीं रह जाएगा।

बेसक ठौर कादर, पाई बेसक कुदरत।
बेसक खेल जो मांगया, बेसक बातें उमत।।५८ ।।

अक्षर ब्रह्म का धाम तथा अक्षर ब्रह्म की योगमाया जिससे खेल बना है, रूहों द्वारा खेल मांगने की हकीकत और उनके इश्क रब्द की बातों में किसी प्रकार का संशय नहीं रहेगा।

बेसक हकें देखाइया, बेसक करी मजकूर।
बेसक रद-बदल करी, हुआ बेसक इलम जहूर।।५९ ।।

श्री राजजी महाराज ने खेल दिखाया है, मोमिनों ने वार्तालाप किया है और इश्क रब्द श्री राजजी से किया है। तारतम वाणी से इन सबके संशय मिट गए।

बेसक जगाई फरामोस में, बेसक दे इलम।
होसी रूहें बका की बेसक, ले बेसक इलम खसम।।६० ।।

श्री राजजी महाराज ने फरामोशी में जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया जिससे परमधाम की रूहों के संशय मिट गए। ऐसा श्री राजजी महाराज का बेशक इलम है।

भुलाइयां खेल में बेसक, हुआ बेसक बेवरा ए।
क्यों ना लें इस्क बेसक, कहाए बेसक संदेसे।।६१ ।।

बेशक श्री राजजी महाराज ने रूहों को खेल में भुलाया। जिससे इश्क का बेशक ब्यौरा हुआ। जब श्री राजजी महाराज ने बेशक जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान भेज दिया तो रूहें इश्क लेकर बेशक क्यों न हों?

Nijanand App

रूहों को हकें बेसक, भेज्या पैगाम बेसक।
इस्क बेसक ले आइयो, भेजी बेसक रूह बुजरक।।६२ ।।

रूहों को श्री राजजी महाराज ने अपना बेशक पैगाम कुरान भेजा और बड़ीरूह श्यामाजी महारानी को भेजकर कहलाया कि बेशक इश्क लेकर हे रूहों, वापस परमधाम आ जाना।

इस्क रूहों कम बेसक, हादी ज्यादा इस्क बेसक।
सब थें इस्क बढ़्या, बेसक इस्क जो हक।।६३ ।।

रूहों का इश्क कम है, श्यामा महारानी का इश्क ज्यादा है और श्री राजजी महाराज का इश्क सबसे बड़ा है।

महामत कहे बेसक मोमिनों, बेसक बेवरा कमाल।
फरामोसी में हक का, पाइए बेसक इस्क हाल।।६४ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज के इश्क का ब्यौरा कमाल का है। हमारी फरामोशी की अवस्था में भी श्री राजजी महाराज का इश्क मिलता रहा।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ७६९ ।।

सूरत अर्स अजीम की बातूनी रोसनी

रूहअल्ला सुभाने भेजिया, रूहें अर्स अपनी जान।
पिउ प्यारे भेजी रूह अपनी, तुम क्यों ना करो पेहेचान।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! श्री राजजी महाराज ने तुम्हें अपनी अंगना जानकर श्यामा महारानी को भेजा है। तुम इनकी पहचान क्यों नहीं करते?

अरवाहें जो अर्स की, सो उरझियां माहें फरेब।
सो सुरझाइयां पट खोल के, केहे हकीकत वेद कतेब।। २ ।।

परमधाम की जो रूहें है, वह खेल में उलझ गई हैं। श्यामा महारानी ने वेद-कतेब की हकीकत कहकर उनकी उलझनों को मिटाकर परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं।

मजकूर बका बीच में, किया हक हादी रूहन।
दई फरामोसी हांसीय को, बीच अपने अर्स मोमिन।। ३ ।।

अखण्ड परमधाम में श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों ने मिलकर इश्क की बातें कीं और इसलिए अपने घर परमधाम में मोमिनों को हंसी के वास्ते बेसुधी दी।

ऐसी तुमें देखाऊं दुनियां, और पनाह में राखों छिपाए।
ओ तुमें ना चीन्ह हीं, ना तुमें ओ चिन्हाए।। ४ ।।

श्री राजजी ने कहा मैं तुम्हें चरणों तले बिठाकर ऐसी दुनियां दिखाऊंगा जहां तुम्हें कोई नहीं पहचानेगा और न तुमको पहचान होगी।

मैं छिपोंगा तुमसों, तुमें नजर में ले।
पाओ ना अर्स या मुझे, काहूं तरफ न पाओ ए।। ५ ।।

मैं तुम्हें अपनी नजर में लेकर छिप जाऊंगा। फिर तुम अपने घर को तथा मुझे नहीं पा सकोगे।

Nijanand App